विषय–हिन्दी पूर्णांक 70

सेमेस्टर III

परीक्षा 2021

प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं निर्गुण भक्तिकाव्य

प्रश्नपत्र कोड – **MHL-C 311**

खण्ड–अ 5x6 = 30

नोट – निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के लघुउत्तर दीजिए। उत्तर लगभग 150 शब्दों में दिये जाएं ।

प्रश्न–1 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न–2 विद्यापति पदावली की भाषा का विवेचन कीजिए।

प्रश्न–3 कबीर के रहस्यवाद की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–4 जायसी के रहस्यवाद पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न–5 जायसी की प्रेम पद्धति की विवेचना कीजिए।

प्रश्न–6 सरहपा का जीवनवृत्त लिखिए।

प्रश्न–7 अब्दुर्रहमान कृत संदेशरासक की विशेषता बताइए।

प्रश्न–8 रैदास के जीवन और काव्य का वर्णन कीजिए।

प्रश्न–9 गुरूनानक के काव्य और जीवन दर्शन का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

प्रश्न–10 विद्यापति पदावली में गीति योजना पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ब

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 10x2 = 20

नोट– इनमें से किन्हीं दो का विस्तृत उत्तर दीजिए।

प्रश्न–1 नागमती के विरह वर्णन की संवेदनात्मक गहनता पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न–2 समाजद्रष्टा कबीर के काव्य की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–3 विद्यापति भक्त हैं या शृंगारी ? इसकी सतर्क विवेचना कीजिए।

प्रश्न–4 पृथ्वीराज रासो के महाकाव्यत्व का वर्णन कीजिए।

नोट – अधोलिखित में से दो पद्यांशों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कीजिए। 10x2 = 20

प्रश्न–1 बलिहारी गुरु आपणै, द्यौंहाणी के बार ।
जिन मानषि तैं देवता, करत न लागी बार ।।
सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार ।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावण हार ।।

प्रश्न–2 पाट महादेइ हिएँ न हारू । समुझि जोउ चित्त चेत सँभारू ।।
भँवर कँवल सँग होई न परावा । सँवरि नेह मालति पहँ आवा ।।
पीउ सेवाति सौं जैस पिरीती । टेकु पियास बाँधु जिय थीती ।।
धरति जैस गँगन के नेहा । पलटि भरै बरखा रितु मेहा ।।
पुनि बसन्त रितु आव नवेली । सो रस सो मधुकर सो बेली ।।
जनि अंस जीउ करसि तूँ नारी । दहि तरिवर पुनि उठहिं संभारी ।।
दिन दस जल सूखा का नंसा । पुनि सोइ सरवर सोई हंसा ।।

प्रश्न–3 सत गुरु मिल्या त का भया, जे मनिपाड़ी भोल ।
पासि बिनंठा कप्पड़ा, क्या करै बिचारी चोल ।।
कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरस्या आई ।
अंतर भीजी आतमा, हरी भरी बणराई ।।

प्रश्न–4 पूस जाड़ थरथर तन काँपा । सुरूज जड़ाइ लंक दिसि तापा ।।
विरह बाढ़ि भा दारुन सीउ । कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ ।।
कंत कहाँ हौं लागौं हियरैं । पंथ अपार सूझ नहिं नियरैं ।।
सौर सुपेती आवै जूड़ी । जानहुँ सेज हिवंचल बूड़ी ।।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला । हौं निसि बासर बिरह कोकिला ।।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी । कैसे जिऔं बिछोहि पँखी ।।
बिरह सँचान भँवें तन चाँड़ा । जीयत खाइ मुएँ नहि छाँड़ा ।।
रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।।